नेपोलियन के पतन के कारण

Course - M.A. History, Part-II, Paper-XIV; Prepared by - Dr. P.K. Poddar

आधुनिक काल में इससे पूर्व ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब एक व्यक्ति एक पूरे युग को प्रभावित करता रहा हो जैसा कि नेपोलियन बोनापार्ट ने 19वीं सदी के प्रथम पन्द्रह वर्षों को प्रभावित किया। इस अवधि में पूरा यूरोपीय महादेश एक ऐसे संघर्ष में जुटा रहा, जो उस व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं का परिणाम था। ठीक ही कहा गया है कि 1799 से 1814 तक का यूरोपीय इतिहास फ्रांस का इतिहास है और इस काल का फ्रांसीसी इतिहास एक व्यक्ति अर्थात् नेपोलियन बोनापार्ट की जीवनी है। टिलसिट की संधि (1807) से नेपोलियन उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच गया। किन्तु वास्तव में यहीं से उसके पतन का भी प्रारंभ होता है। अपने पतन के सम्बन्ध में उसने स्वयं कहा था कि "स्पेन के फोड़े, महाद्वीपीय व्यवस्था तथा रूसी अभियान ने मेरा सर्वनाश कर दिया।" वस्तुतः उसके पतन के ये तीन प्रमुख कारण सिद्ध हुए।

यूरोप में नेपोलियन की केवल एक महत्वाकांक्षा शेष रह गई थी और वह थी इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त करना। किन्तु इस आकांक्षा की पूर्ति में नेपोलियन युद्धों के एक भयानक कुचक्र में फँस गया जिसने उसके पतन को अवश्यम्भावी बना दिया। नेपोलियन जानता था कि जबतक फ्रांस के पास शक्तिशाली नौ-सेना नहीं होगी तबतक प्रत्यक्ष रूप से इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर उसे हराना असंभव है। अतएव उसने उसे पराजित करने का एक परोक्ष उपाय निकाला जिसे महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) कहते हैं। यह इंग्लैण्ड के विरुद्ध एक आर्थिक युद्ध था। महाद्वीपीय व्यवस्था ही नेपोलियन के पतन का मुख्य कारण बनी। इस गलती ने उसके द्वारा की जाने वाली दूसरी गलतियों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैण्ड की शक्ति

का आधार उसका व्यापार है। उसे विश्वास था कि यदि किसी तरह उसके व्यापार को नष्ट कर दिया जाए तब 'दुकानदारों का यह देश' घुटने टेक देगा। अतएव नवम्बर 1806 ई० में नेपोलियन ने बर्लिन से एक आदेश निकाला जिसके अनुसार इंगलैण्ड और उसके सभी उपनिवेशों के साथ यूरोप का व्यापार निषिद्ध कर दिया गया। आज्ञा जारी की गई कि इंगलैण्ड का कोई भी जहाज यूरोप के किसी बन्दरगाह पर न आने पाये। इस प्रकार नेपोलियन ने इंगलैण्ड के व्यापार के बहिष्कार की नीति अपनाई। नेपोलियन की इस नीति का जवाब इंगलैण्ड ने "आर्डर-इन-कौंसिल" (1807) द्वारा दिया। इसके अनुसार फ्रांस और उसके मित्र-राज्यों के सभी बन्दरगाहों पर निरोध जारी किया गया। उसने अपनी नौ-शक्ति के आधार पर फ्रांस और उसके मित्र देशों के जहाजों को संसार के अन्य भागों में जाने से रोक दिया। यह भी घोषणा की गई कि तटस्थ देशों के जहाज तभी नेपोलियन के अधिकार-क्षेत्र में पड़ने वाले बंदरगाहों पर जा सकते थे, जबकि पहले वे ब्रिटेन के बंदरगाहों पर रुकें। इस प्रकार, ब्रिटेन ने अपने आयात को यूरोप-प्रदेश में तटस्थ मार्गों द्वारा भेजने का प्रयास किया। यह वही बात थी जिसे नेपोलियन रोकना चाहता था। अतः 1807 ई० में उसने मिलान से एक और आदेश जारी किया जिसके अनुसार यह घोषित किया गया कि यदि किसी भी देश का जहाज इंगलैण्ड के बन्दरगाहों से होकर गुजरेगा तो उसको जब्त कर लिया जायेगा। महाद्वीपीय व्यवस्था अपना उद्देश्य-ब्रिटिश व्यापार को नष्ट करना-पूरा नहीं कर सकी। अन्ततः महाद्वीपीय व्यवस्था बुरी तरह असफल रही, क्योंकि इसने नेपोलियन के शासन के विरुद्ध व्यापक रूप से असंतोष फैलाया। चूँकि समुद्र पर इंगलैण्ड का अधिकार था, अतः उसके जहाज तो दुनियाँ के विभिन्न हिस्सों में जाते रहे।

किन्तु यूरोपीय देशों को कई आवश्यक विदेशी माल मिलना बन्द हो गया। चीजों का दाम बढ़ गया। तस्कर व्यापार जोरों से शुरू हुआ। जन-साधारण का जीवन कष्टकर हो गया और परिणामस्वरूप नेपोलियन लोगों की सहानुभूति खो बैठा। इसी प्रकार ऐसे समय जब नेपोलियन अभी भी सैनिक विजयों का आनंद उठा रहा था, उसे एक बड़ी आर्थिक पराजय का मुँह देखना पड़ा। अन्ततोगत्वा, यह महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन के लिए घातक प्रमाणित हुई।

महाद्वीपीय व्यवस्था को पोप के राज्य में लागू करने के उद्देश्य से नेपोलियन ने पोप से माँग की कि वह अपने बंदरगाहों को ब्रिटिश जहाजों के लिए बंद कर दे। पोप ने व्यवस्था का बहाना लेकर इनकार कर दिया। इस पर 1808 ई० में नेपोलियन ने रोम पर आक्रमण कर आधिपत्य जमा लिया। इसके बाद पोप ने नेपोलियन को धर्म से बहिष्कृत कर दिया। इस पर उसने पोप को बंदी बना लिया। पोप के साथ ऐसा व्यवहार करना नेपोलियन की बड़ी भूल थी। इसका प्रभाव समस्त कैथोलिक संसार पर पड़ा और कैथोलिक जनता नेपोलियन के कट्टर विरोधी हो गयी।

नेपोलियन के दबाव में आकर पुर्तगाल महाद्वीपीय व्यवस्था में सम्मिलित हो गया था किन्तु अंग्रेजों के उकसाने पर वह आगे चलकर इससे अलग हो गया और उसके बंदरगाहों से होकर अंग्रेजी माल गुप्त रूप से यूरोप में पहुँचने लगा। इसपर नेपोलियन ने पुर्तगाल को जीत लिया। इस घटना के परिणाम बड़े महत्वपूर्ण थे, क्योंकि वस्तुतः यह स्पेन पर होनेवाले फ्रांसीसी आक्रमण की भूमिका थी। और स्पेन का आक्रमण नेपोलियन को ऐसे गर्त में खींच ले गया, जहाँ से निकलना उसके लिए मुश्किल था और जो उसके पतन का दूसरा महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ। इसी बीच स्पेन में गद्दी को लेकर चतुर्थ

चार्ल्स और उसके पुत्र फर्डिनेण्ड में झगड़ा हुआ दी गया। नेपोलियन ने दोनों को बुलाकर उनसे राजगद्दी से त्याग पत्र लिखवा लिया और इसके बाद अपने भाई - जोजेफ को स्पेन की राजगद्दी पर बैठा दिया। किन्तु स्पेन की जनता नेपोलियन के इस अत्याचार को सहने के लिए तैयार नहीं हुई। सारा स्पेन उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। जुलाई 1808 में बैलन नामक स्थान में स्पेन वालों ने फ्रांसीसियों को पराजित किया। इससे समस्त यूरोप में उत्साह फैला गया, क्योंकि इससे फ्रांसीसी सेना की अजेयता का दावा नष्ट हो गया। इसके बाद स्वयं नेपोलियन एक सेना के साथ स्पेन गया और स्पेनी सेनाओं को परास्त कर पुनः जोजेफ को सिंहासन पर बैठा दिया। किन्तु स्पेन का युद्ध लगातार चलता रहा। अंग्रेजी सेना बराबर स्पेन वासियों की सहायता करती रही। स्पेन का युद्ध नेपोलियन के लिए एक विकट समस्या हो गया। वह ऐसे जाल में फंस चुका था जिसमें से निकलना मुश्किल था। स्वयं नेपोलियन ने स्वीकार किया था कि 'स्पेन के पकते हुए फोड़े ने मुझे बर्बाद कर दिया'। मई 1813 में अंग्रेजों की मदद से इस प्रायद्वीपीय युद्ध का अंत नेपोलियन की पूर्ण पराजय से हुआ।

एक बार फिर यह महाद्वीपीय व्यवस्था ही नेपोलियन को 1812 ई० में रूस के साथ युद्ध में उतारा दिया। रूस के जार के विरुद्ध नेपोलियन की प्रमुख शिकायत यह थी कि अलेक्जेण्डर अपने बंदरगाहों पर महाद्वीपीय व्यवस्था लागू नहीं कर रहा था। 1810 ई० में फ्रांस ने रूस से अपने बंदरगाहों पर मौजूद सभी तटस्थ जहाजों को जब्त कर लेने को कहा, क्योंकि इन पर ब्रिटिश माल लदे थे। जार ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। 1810 ई० में रूस औपचारिक रूप से महाद्वीपीय व्यवस्था से अलग हो गया। इस घटना से नेपोलियन को क्रोधित

कर दिया और उसने जार को एक पाठ पढ़ाने का निश्चय किया। नेपोलियन ने बाइ लाख की एक विशाल सेना तैयार कर अप्रैल 1812 में रूस पर आक्रमण कर दिया। यह सैनिक अभियान बाद में नेपोलियन के लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ। इस अभियान में नेपोलियन बुरी तरह पराजित हुआ। उसकी आशाओं के विपरीत रूसी सेना ने युद्ध मैदान में फ्रांसीसी सेना का मोर्चा न लेने की नीति अपनाई और रूसी सेना पीछे हटती गई। नेपोलियन जब मास्को पहुँचा तो पूरा नगर वीरान और त्रस्त पड़ा था। दो महीनों तक नेपोलियन ने मास्को में इस उम्मीद में जमा रहा कि जार की ओर से संधि का कोई प्रस्ताव आयेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ और फिर रूस की भयंकर सर्दी शुरू हो गई। रूस के जारे में नेपोलियन की पूरी सेना तितर-बितर हो गई। निश्चित रूप से नेपोलियन को पराजित होना पड़ा। कठिन परिस्थिति में निराश होकर नेपोलियन ने अपनी सेना को वापस लौटने की आज्ञा दी। रास्ते में भोजन-वस्त्र के अभाव में लाखों सैनिक मर गए। परिणामस्वरूप लगभग बीस हजार सैनिक ही फ्रांस वापस लौट पाए। रूसी अभियान की असफलता से नेपोलियन की सैनिक शक्ति को गहरा धक्का लगा। उसकी शक्ति का विनाश देखकर उसके राज्यों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अजीत उत्साह पैदा हो गया। नेपोलियन के विरुद्ध यूरोपीय राज्यों का 'चौथा गुट' तैयार हो गया।

नेपोलियन की असीम महत्वाकांक्षा भी उसके पतन का कारण बना। वह विश्व-विजय का स्वप्न देख रहा था। इंगलैण्ड के अतिरिक्त यूरोप के प्रायः सभी देशों को जीत लेने के पश्चात इंगलैण्ड की स्वतंत्रता उसकी दृष्टि में खटक रही थी। उसने इंगलैण्ड को पराजित करने के लिए अपने साम्राज्य की समस्त शक्ति लगा दी। परन्तु फिर भी वह इसमें सफल नहीं हो सका। यदि उसकी महत्वाकांक्षा सीमित होती तो उसका पतन इतनी जल्दी न होता।

जनता में देश भक्ति की भावना भी नेपोलियन के पतन का कारण बना। वह देश-पर-देश जीतता चला गया परन्तु उन देशों की जनता उसके प्रति सद्भावना नहीं रखती थी क्योंकि उसका राज्य शक्ति पर आधारित था। उसके यहाँ जनता को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं थी। इतिहास बतलाता है कि शक्ति पर आधारित राज्य तभी तक चलते हैं जब तक कि उसके संचालक शक्तिवान रहते हैं, शक्ति क्षीण होने पर उसके अधीन राज्य स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न करने लगते हैं। नेपोलियन के साथ भी यही हुआ। रूस में उसकी विशाल सेना नष्ट हो गयी। फलतः यूरोप के देशों ने ऐसे संकट काल में उसके विरुद्ध चतुर्थ गुट का निर्माण किया और अंत में इसी गुट ने नेपोलियन को लिपजिग एवं वाटरलू के युद्ध में हराया।

इस समय यूरोपीय राष्ट्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव हुआ। नेपोलियन साम्राज्यवादी था। उसके यहाँ राष्ट्रीयता के सिद्धान्त का कोई आदर नहीं था। राष्ट्रीयता के आधार पर ही स्पेन नेपोलियन का शत्रु हो गया। नेपोलियन स्पेन के जनमत को परास्त न कर सका। स्पेन की देखादेखी इटली, प्रशा एवं जर्मनी में भी राष्ट्रीयता की लहर दौड़ गयी। नेपोलियन ने अनेक राजाओं को परास्त किया था, परन्तु जनमत के सम्मुख उसे भी घुटने टेकने पड़े।

नेपोलियन ने अपने सम्बन्धियों के साथ बहुत अच्छा, प्रेमपूर्ण सद्व्यवहार किया था। उसका यह उत्तम व्यवहार भी कुछ अंशों में उसके पतन का कारण बन गया था। उसके अभिलाषा सम्बन्धी अकृतज्ञ और अयोग्य थे। उसने अपने भाइयों तथा अन्य सम्बन्धियों को विजित देशों का शासक बना दिया था और फ्रांस में भी उच्च पद दे दिये थे, परन्तु वे इन पदों के योग्य सिद्ध नहीं हुए। इटली और जर्मनी में उसकी शक्ति के विनाश का उत्तरदायित्व अधिकांशतः केरोलाइन और जेरोम पर ही था। इस प्रकार उसके शक्तिहीन सम्बन्धी उसे यथासंभव हानि ही पहुँचाते रहे। नेपोलियन

को उनसे शिकायत रही कि "मैं उनका जितना भला किया, उतना ही उन्होंने मेरा बुरा किया"। इस प्रकार भाई-भतीजावाद ने नेपोलियन के लिए हानिकारक हुआ।

नेपोलियन के स्वभाव में कुछ कमियाँ ऐसी थी जिन्होंने उसके पतन में योग दिया। प्रो० हार्सेड ने लिखा है कि "नेपोलियन बहुत जिद्दी बन गया था, यह उसके पतन का मुख्य कारण था। उसका कभी विरोध नहीं किया गया, इसलिए वह घमंडी और अभिमानी बन गया था। वह मानने लगा था कि उसका हर काम ठीक होता है और उससे कोई भूल हो ही नहीं सकती। वह अपने सेनाध्यक्षों की सलाह की उपेक्षा करने लगा। अतः उसके सच्चे साथी उससे दूर हटते गये।"

डा० स्लोअन (Sloan) का कथन है कि "उसके पतन का समस्त कारण एक ही शब्द थकान में निहित है।" उसने 15 वर्ष तक फ्रांस का नेतृत्व किया और उसे उन्नति के शिखर पर पहुँचाया, परन्तु समय बीतने के साथ उसकी शक्ति क्षीण होती गई। ज्यों-ज्यों तूफान बढ़ता गया, त्यों-त्यों वह क्लान्त होता गया।

ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति भी नेपोलियन के पतन के लिए जिम्मेवार थी। औद्योगिक क्रान्ति के नाते इंगलैण्ड के राष्ट्रीय कोष में अपार धन एकत्रित हो गया था। इस अपरिमित धन के बल पर ग्रेट ब्रिटेन और उसके साथी राष्ट्र अपनी सेनाओं को आधुनिक हथियारों से सुसज्जित कर नेपोलियन को पराजित कर सके थे। इसलिए यह कथन प्रसिद्ध है कि नेपोलियन को वास्तविक पराजय वाटरलू की युद्ध-भूमि में न होकर मान्चेस्टर के कपड़ों के कारखानों और बरमिंघम की लोहे की भट्ठियों में हुई थी।

इस प्रकार उपर्युक्त कारणों के चलते नेपोलियन का पतन हुआ। वास्तविक रूप में महाद्वीपीय व्यवस्था, स्पेन के साथ युद्ध, एवं मास्को अभियान का ही नेपोलियन के पतन में प्रमुख हाथ था।

The End